ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 19 अंक 14 कुल पृष्ठ-8 23 से 29 मई, 2024 दयानन्दाब्द 199 सृष्टि सम्वत् 1960853124 सम्वत् 2080 वै. कृ.-09

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती तथा आर्य समाज स्थापना के 150वें स्थापना दिवस के अवसर पर आर्य समाज बर्मिंघम (वेस्ट मिडलैंड), इंग्लैंड में 'ज्ञान ज्योति पर्व' का विशाल कार्यक्रम भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ

आर्य समाज की विचारधारा वैश्विक है – स्वामी आर्यवेश

स्वामी दयानन्द सरस्वती के सिद्धान्त आज भी प्रासंगिक हैं – प्रो. विट्ठलराव आर्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती तथा आर्य समाज स्थापना के 150वें स्थापना दिवस के उपलक्ष में आर्य समाज बर्मिंघम, वेस्ट मिडलैंड, इंग्लैंड में ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव का विशाल आयोजन दिनांक 11 मई, 2024 को भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। यह महासम्मेलन बर्मिंघम के न्यू बिंगले हॉल एक होकले सर्कस में आयोजित हुआ। यह हॉल बर्मिंघम का बहुचर्चित एवं विशाल हॉल है। जिसे आयोजकों ने इस महासम्मेलन के लिए बुक किया था। इस अवसर पर भारत से सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी, महामंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट, अन्तर्राष्ट्रीय आर्य प्रचारक मेजर विजय आर्य मोहाली, श्री सुखवीर सिंह आर्य रोहतक विशेष रूप से सम्मिलित हुए। उनके अतिरिक्त हॉलैंड से श्री सुरेन महाबली (प्रधान, आर्य समाज फेडरेशन, नीदरलैंड), श्री अमरेश तिवारी प्रधान आर्य समाज नीदरलैंड, युवा विद्वान् आचार्य नरदेव यजुर्वेदी, आचार्य ओम प्रकाश सामवेदी जी, आचार्य विजय प्रकाश शास्त्री एवं श्री देवानन्द भघेलू भी सम्मेलन में सम्मिलित हुए। लन्दन से प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ. ताना जी आचार्य, डॉ. रामचन्द्र शास्त्री के अतिरिक्त श्री अनिल आर्य एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शक्ति आदि भी कार्यक्रम में पधारे हुए थे। नौटिघम से भी आर्यजन कार्यक्रम में शामिल हुए। बर्मिंघम का यह महासम्मेलन ऐतिहासिक छाप छोड़ते हुए सफल रहा।

प्रतः 10 बजे चतुर्वेद शतकम् यज्ञ का शुभारम्भ आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान् एवं आर्य समाज बर्मिंघम में मिनिस्टर ऑफ रिलीजन के पद पर प्रतिष्ठित डॉ. आचार्य उमेश जी यादव के कुशल संयोजन में प्रारम्भ हुआ। आर्य जगत् के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी के सान्निध्य में प्रारम्भ हुए इस महायज्ञ में मंच पर हॉलैंड तथा लन्दन से पधारे हुए युवा विद्वानों ने सस्वर वेद पाठ किया तथा आर्य समाज के संरक्षक डॉ. कृष्ण चोपड़ा, आर्य समाज के प्रधान श्री रविन्द्र रेनुकुंटा जी, आर्य समाज की युवा मंत्री श्रीमती मोना खुराना, कोषाध्यक्ष श्री विनोद गुलाटी, ट्रस्टी श्री विजय हरफ, श्री उमेशचन्द्र कथूरिया, श्री परिमल सोमानी व बहन विमला सौंद आदि के अतिरिक्त भारत कांसुलेट जनरल श्री वेंकटा चलन मुरुगन, श्री चमनलाल 'मेयर' आदि सपरिवार यजमान बनें और अपनी आहुतियां प्रदान की। यज्ञ में लगभग एक हजार स्त्री–पुरुषों ने आहुतियां देकर अपनी श्रद्धा एवं भावनाओं को प्रदर्शित किया। इस अवसर पर विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारी एवं सदस्य सपरिवार भारी संख्या में उपस्थित थे जिससे महासम्मेलन का वातावरण उत्साह एवं जोश से ओत–प्रोत था। इस विशाल सभागार में पूरा वातावरण यज्ञमय बना हुआ था। सभी स्त्री–पुरुष हर्षोल्लास के साथ कार्यक्रम में अपनी भागीदारी कर रहे थे। यज्ञ की पूर्णाहुति के उपरान्त सभी वैदिक विद्वानों ने उपस्थित जनसमूह के बीच जाकर शीतल जल के द्वारा आशीर्वाद प्रदान किया और सभी के परिवारों के लिए मंगल कामना की। विदित हो कि इस सम्पूर्ण आयोजन का संचालन एवं संयोजन आचार्य डॉ. उमेश यादव ने अपने अनुभव एवं कुशलता के साथ किया। आचार्य उमेश जी इंग्लैण्ड जाने से पहले भारत में सामाजिक कार्य का विशेष अनुभव प्राप्त कर चुके हैं। वे दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय हिसार के प्राचार्य पद को वर्षों संभालने के बाद चण्डीगढ़ व अन्य क्षेत्रों में व्याख्यान, लेख एवं कर्मकाण्ड के द्वारा प्रभावशाली कार्य कर चुके हैं। अपने लम्बे अनुभव के आधार पर ही वे यू.के. में भी अत्यन्त लोकप्रिय वैदिक विद्वान् के रूप में जाने जाते हैं। यज्ञ के उपरान्त भोजनावकाश का समय था और ठीक 2 बजे कार्यक्रम पुनः प्रारम्भ हुआ। जिसमें सर्वश्री स्वामी आर्यवेश जी, प्रो. विट्ठलराव आर्य जी, भारत के कांसुलेट जनरल वेंकटा चलन मुरुगन जी, बर्मिंघम के मेयर श्री चमन लाल जी, आर्य समाज बर्मिंघम के संरक्षक श्री कृष्ण चोपड़ा जी, आर्य समाज बर्मिंघम के प्रधान श्री रविन्द्र रेनुकुंटा जी तथा डॉ. आचार्य उमेश यादव जी ने अपने विचार प्रस्तुत किये तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन एवं कार्यों और आर्य समाज की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। इस बीच सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये गये जिसमें भारत के विभिन्न प्रान्तों की लोक भाषा में लोक गीतों का कार्यक्रम प्रमुख रहा। बच्चों ने भी अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित करते हुए कार्यक्रम प्रस्तुत किये। सांस्कृतिक कार्यक्रम का संयोजन श्रीमती मोना खुराना मंत्री आर्य समाज बर्मिंघम एवं डॉ. उमेश यादव जी की सुपुत्री श्रीमती प्रमा यादव ने किया।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वीं जन्म जयन्ती के कार्यक्रमों की श्रृंखला को विस्तार से बताते हुए कहा कि भारत के अलावा अन्य देशों में भी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वें जन्मोत्सव का कार्यक्रम विशेष रूप से मनाया जा रहा है। उसी श्रृंखला में आज बर्मिंघम में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती का आयोजन आचार्य डॉ. उमेश यादव जी के संयोजन में आयोजित किया गया है, यह विशेष खुशी की बात है। स्वामी जी ने कहा कि आर्य

शेष पृष्ठ 4 पर

आर्य समाज की उन्नति के लिए निम्न सुझाव

- पं. धर्मदेव विद्यामार्तण्ड (देवमुनि वानप्रस्थ)

आर्य समाज की स्थापना महर्षि दयानन्द ने जिस उदात्त भावना से प्रेरित होकर की थी उसे आर्य समाज के षष्ठ नियम में स्पष्टतया सूचित किया गया है जो निम्नलिखित हैः–

''संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।''

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए आर्य समाजों ने देश और विदेशों में जो अद्भुत कार्य करके दिखाया है वह सर्वविदित है और उसके कारण आर्य समाज की कीर्ति बढ़ी है। शिक्षा प्रसार, समाज सुधार, दलितोद्धार और वैदिक धर्म के प्रचारार्थ आर्य समाज ने अपनी स्थापना के प्रारम्भिक वर्षों में जो अत्यन्त प्रशंसनीय कार्य किया है उस पर वह गर्व कर सकता है किन्तु यह खेद के साथ कहना पड़ेगा कि आर्य समाज की वर्तमान अवस्था सन्तोषजनक नहीं है। आर्य का अर्थ श्रेष्ठ, धर्मात्मा, सदाचारी, कर्त्तव्यपरायण व्यक्ति होता है जैसे कि **'आर्यव्रता विसृजन्तो अधिक्षमि'** (ऋग्वेद १०,६५,११)

कर्तव्यमाचरन्‌कार्यम्, अकर्तव्यमनाचरन्।
तिष्ठतिप्रकृताचारे, स तु आर्य इतिस्मृतः (व.स्मृ.)

आर्य ईश्वर पुत्रः (निरुक्ते) पूज्यः श्रेष्ठः, मान्यः, उदार चरितः, शान्त चित्तः, न्यायपथावलम्बी, सततं कर्त्तव्यकर्मानुष्ठाता, धार्मिक, धर्मशील, (शब्द कल्पद्रुम, वाचस्पत्यवृहदभिधानादि संस्कृत कोष) इत्यादि से स्पष्ट है। ऐसे धर्मात्मा कर्तव्यपरायण व्यक्तियों का संगठन हो तभी सारे संसार का कल्याण हो सकता है। यह उदात्त भावना महर्षि दयानन्द के अन्दर विद्यमान थी। प्रश्न यह हैकि क्या आर्य समाजों के सब सदस्य, सब नहीं तो क्या ७५ प्रतिशत भी ऐसे ही श्रेष्ठ, धर्मात्मा, पूर्ण सदाचारी और कर्तव्यपरायण हैं? क्या उनके अन्दर 'कर्तव्यमाचरन्' इस श्लोक में कहा हुआ आर्य का यह लक्षण कि जो कर्तव्यकर्म का सदा अनुष्ठान करने वाला हो और जो बड़ी से बड़ी आपत्ति और प्रलोभन के आने पर भी पापकर्म में प्रवृत्त न हो, जो पूर्ण सदाचारी हो चरितार्थ होता है? क्या आर्यों की बड़ी संख्या महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित इस परम धर्म का पालन करती है कि ''वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना सब आर्यों का परम धर्म है।'' कितने आर्य हैं जो सन्ध्या हवन यज्ञ संस्कारादि को परिवार सहित उस श्रद्धा के साथ करते है जो सच्चे आस्तिकों में पाई जानी चाहिए? क्या आर्यों में परस्पर वह प्रेम और एकता की भावना है जिसका वेदों में–

संगच्छध्व संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
समानी व आकूतिः समानाहृदयानि वः।

इत्यादि मन्त्रों द्वारा उपदेश किया गया है? क्या अनेक आर्य समाजों, संस्थाओं तथा प्रतिनिधि सभादि में दलबन्दी के कारण आर्य समाज के कार्य में बाधा नहीं पड़ रही? क्या आर्यों के जीवन आज उतने सत्यमय, प्रेममय और विश्वसनीय तथा अपने सिद्धान्तानुकूल हैं जितने होने चाहिये? ऐसे आर्य कितने हैं जिनका पूरा परिवार आर्यजीवन बिताने वाला है? ऐसे आर्य कितने हैं जो जात–पात की दलदल से बिल्कुल ऊपर निकले हुए हों और वर्णाश्रम धर्म का श्रद्धापूर्वक पालन करने वाले हों? आज आर्य समाज में प्रबल नेतृत्व और अनुशासनवद्धता की कितनी न्यूनता प्रतीत होती है।

इन सबको देखते हुए यह कहना पड़ता है कि आर्य समाज की वर्तमान अवस्था सन्तोषजनक नहीं है तथापि आर्यों के अन्दर उत्तम जीवन शक्ति विद्यमान है। वे यदि महर्षि दयानन्द के आदर्श और उनके वेदोक्त आदर्शों को अपने सन्मुख रखते हुए अपने जीवन को सच्चा आर्य जीवन बनाने का यत्न करें तो अब भी कुछ बिगड़ा नहीं है। वे अब भी उठ सकते हैं और संसार के आगे उच्च जीवन का आदर्श स्थापित कर सकते हैं।

अतः सामाजिक क्षेत्र में दीर्घकालीन अनुभव के आधार पर आर्य समाज की उन्नति के लिए मेरे निर्देश संक्षेप में निम्न हैः–

(१) प्रत्येक नर–नारी को अपना जीवन सच्चा आर्य जीवन बनाने का अधिक से अधिक यत्न करना चाहिए और इसके लिए वास्तविक सन्ध्योपासना और वेदों के स्वाध्याय की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए आर्य के उपर्युक्त लक्षणों को जीवन में चरितार्थ करने का सदा ध्यान रखना चाहिये।

(२) आर्य समाज की वास्तविक उन्नति तब तक असंभव है जब तक आर्यों का पारिवारिक जीवन भी वैदिक आदर्शानुसार न हो। अतः इस ओर अत्यधिक ध्यान देने की आवश्यकता है कि देवियों और कुमार कुमारियों में वैदिक धर्म के प्रति प्रेम उत्पन्न हो। पारिवारिक सत्संगों के आयोजन से पर्याप्त लाभ हो सकता है। समस्त परिवार को आर्य बनाना प्रत्येक आर्य सदस्य को अपना कर्तव्य समझना चाहिए।

(३) कुमार कुमारियों के अन्दर वैदिक भावनाओं को जागृत करने के लिए सब आर्य समाजों में आर्य कुमार सभाओं की स्थापना करनी चाहिए और उनको सेवा करने, भाषण शक्ति को बढ़ाने तथा धर्म शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिये। कुमारियों के लिये पृथक् आर्य कुमारी सभाओं का आयोजन किया जा सकता है।

(४) उत्तम साहित्य के प्रकाशन की व्यवस्था इस समय अत्यन्त अपर्याप्त है। आर्य जगत् के अधिकतर प्रकाशक व्यावसायिक दृष्टि से गल्प, उपन्यास, नाटकादि के प्रकाशन में लग गये हैं। इसका परिणाम यह हो रहा है कि अनेक आर्य विद्वानों के ग्रन्थ चिरकाल तक उनके पास पड़े रहते हैं क्योंकि उनको कोई अच्छा प्रकाशक नहीं मिलता। उत्तम साहित्य के निर्माण में लेखक को विशेष परिश्रम करना पड़ता है जो तभी संभव है जब आर्थिक चिन्ता से पर्याप्त मुक्त कर दिया जाए। उसके लिए उचित व्यवस्था का आर्य जगत् में लगभग अभाव है जिसके कारण अनेक विद्वान् तपस्या और परिश्रम करके जो वेदादि विषयक ग्रन्थ तैयार करते हैं, वर्षों तक जनता उनसे लाभ उठा नहीं सकती। इस उत्तम साहित्य निर्माण और प्रकाशन के कार्य की ओर जब तक सार्वदेशिक सभा तथा प्रतिनिधि सभादि विशेष ध्यान न देगी तब तक शिक्षित जनता में और विदेशों में प्रचार न हो सकेगा। ईसाइयों के अतिरिक्त श्री रामकृष्णामिशन और थियोसफिकल सोसाइटी ने जो साहित्य तैयार किया है आर्य समाज का साहित्य उसकी अपेक्षा बहुत कम है। अंग्रेजी में उच्चकोटि का साहित्य तो अभी बहुत ही कम है।

(६) वेद प्रचार के नाम से जो प्रचार किया जाता है उसमें वस्तुतः वेद का प्रचार नाम मात्र का होता है। इधर–उधर की बातें और राजनैतिक आलोचनाएं ही उसमें अधिक होती हैं। उसे सच्चे अर्थों में वेद–प्रचार बनाने और तदर्थ विद्वान्, सदाचारी तपस्वी विद्वानों के सहयोग ग्रहण करने की आवश्यकता है। धर्मप्रचार की वर्तमान प्रणाली में परिवर्तन की भी बड़ी भारी आवश्यकता है। किन्तु उसके विषय में आर्य विद्वानों और कार्यकर्त्ताओं को मिलकर गम्भीरता से विचार करके उत्तम योजना बनानी चाहिए।

(७) इस समय देश में जो अन्धविश्वास, पाखण्ड, गुरुडम, भ्रष्टाचार, दुराचार, तथा नैतिक पतन सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रहे हैं उनको दूर करने के लिए एक अत्यन्त संगठित प्रबल सदाचार अभियान को चलाने की आवश्यकता है।

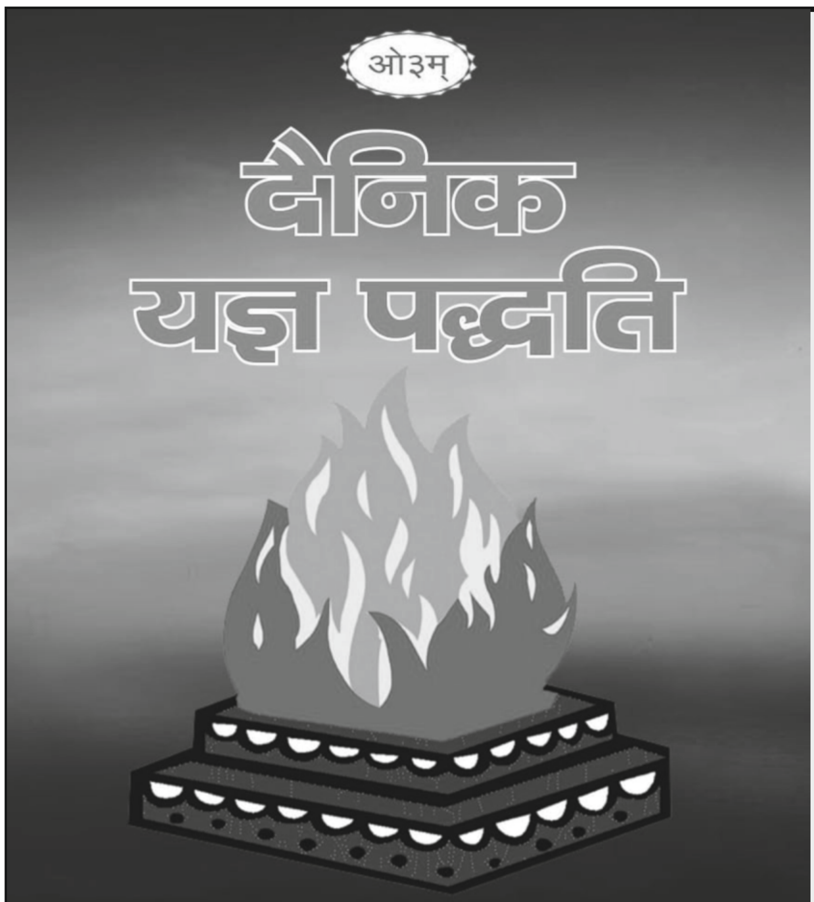

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

'दैनिक यज्ञ पद्धति'

आर्यजनों की भारी माँग पर आर्य समाजों के साप्ताहिक सत्संगों तथा विशिष्ट बृहद्यज्ञों की सामान्य यज्ञ पद्धति (महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रणीत पंच महायज्ञ सहित) इस पुस्तक में समाहित की गई है। इसके अतिरिक्त विशेष मन्त्र, विशेष प्रार्थनाएँ तथा भजन संग्रह का भी समावेश इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक में किया गया है। यज्ञ की यह पुस्तक अत्यन्त आकर्षक तथा सुन्दर टाईटल के साथ बढ़िया कागज के ऊपर छपकर तैयार है। 50 पृष्ठों तथा 23X36 के 16वें साईज की इस पुस्तक का मूल्य 18/ रुपये रखा गया है। लेकिन 100 पुस्तक लेने पर मात्र 1000/– रुपये में उपलब्ध कराई जा रही है। डाक व्यय अतिरिक्त देय होगा।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2
दूरभाष :–011–23274771, 011–42415359
मो.:–8218863689

ईश्वर की रचना और उपासना

—प्रेम प्रकाश वानप्रस्थ

१. रचयिता की रचना एक अद्भुत कमाल है। संसार में हम सब एक नियम देखते हैं कि कोई वस्तु बिना बनाये नहीं बनती। ये सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी, आकाश समुद्रों की गहराई और पर्वतों की ऊँचाई, ये सब देख कर यह मानना ही पड़ता है कि इन सब का कोई बनाने वाला है, जिसे ईश्वर कहते हैं, क्योंकि वह ऐश्वर्यों का दाता व निर्माता है, इसी गुण के आधार पर उसका ''ईश्वर'' नाम हुआ। अन्यथा उसका मुख्य नाम ''ओ३म्'' है।

कुछ लोग ईश्वर को नहीं मानते

२. सृष्टि में जो वस्तु बनती है, वह अवश्य बिगड़ती है। जो जन्मता है वह अवश्य मरता है। जमीन घूमती है, जिससे दिन रात्रि बनते हैं। वृक्षों पर फल फूल लगने लगते हैं, परन्तु जो फल जहाँ लगना चाहिये वहीं लगा है, बेर, लीची, अंगूर, अमरूद आदि ऊपर लगे हैं, और बड़े–बड़े पेठे, तरबूज आदि नीचे लगे हैं, क्योंकि यदि ऐसा न होता तो थोड़ी सी तेज वायु चलने पर कोई तरबूज पेठा टूट कर नीचे गिर जाता तो मनुष्य का सिर फट जाता। इन नियमों को जो नियन्त्रण कर रहा है, उसे ईश्वर कहते हैं।

ईश्वर कण-कण में व्यापक है

३. भगवान् कोई ऐसा सेठ नहीं, जो सृष्टि बनाकर कहीं चला गया हो। वह निराकार होने से कण–कण में व्यापक है। इसीलिए सारी सृष्टि उसके नियम का पालन कर रही है। यदि वह सब वस्तुओं में व्यापता नहीं होता तो सारे नियम बिगड़ जाते। सृष्टि के आदि में बने मनुष्य, पशु, पक्षी, जलचर और फल, फूल आदि आज भी वैसे ही हैं, जैसे सृष्टि के आदि में बने थे। उसमें कोई अन्तर नहीं आया और न ही किसी व्यवस्था में खराबी आई। यही उसकी व्यापकता का सब से बड़ा प्रमाण है परन्तु मनुष्य की बनाई सब चीजें इसीलिए खराब होती हैं क्योंकि वह वस्तुओं में व्यापक नहीं।

रचना में अन्तर

४. इस विशाल सृष्टि की रचना करके भगवान् ने कमाल किया है। सृष्टि के सारे मनुष्य मिलकर भी एक चाँद नहीं बना सकते, परन्तु मानव ने भी अपनी रचना में कमाल किया है, जैसे वर्तमान में सुविधाएँ टेलीफोन, टी. वी., वायुयान, राकेट आदि गर्मी में बर्फ, सर्दी में हीटर बड़े–बड़े समुद्री जहाज और आजकल कम्प्यूटर ने तो ऐसा कमाल किया, लोगों को आश्चर्य में डाल दिया है, परन्तु भगवान् की रचना और मनुष्य की रचना में एक मौलिक अन्तर है। भगवान् ने जिन वस्तुओं की मनुष्य को आवश्यकता है, उन वस्तुओं में ही उन वस्तुओं को पैदा करने की शक्ति प्रदान कर दी, जैसे गेहूँ का दाना, सैकड़ों गेहूँ के दाने पैदा कर सकता है, एक आम हजारों आम पैदा कर सकता है, मनुष्य मनुष्य पैदा कर सकता है, गाय गाय पैदा कर सकती है, आदि–आदि। परन्तु मनुष्य का बनाया रेल का इंजन अपने जैसा रेल का इंजन पैदा नहीं कर सकता, घड़ी घड़ी पैदा नहीं कर सकती और सूई अपने जैसी सूई भी नहीं बना सकती।

रचना में विशेषता

५. भगवान् के नियमों को जानकर मनुष्य ने रचना तो की है। जैसे कुर्सी, मेज, कार, रेल का इंजन, वायुयान आदि–आदि बनाये, परन्तु कुर्सी की लकड़ी को नहीं बनाया, लोहे को नहीं बनाया, रुई को नहीं बनाया, कोयले को नहीं बनाया, अग्नि को नहीं बनाया, जल को नहीं बनाया, पैट्रोल को नहीं बनाया परन्तु रेल के इंजन को चलाया। इसी लिए महर्षि दयानन्द जी महाराज आर्यसमाज के प्रथम नियम में कहते हैं कि ''सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।'' फिर मनुष्य सब वस्तुएँ दिन में या लाईट में ही बनाता है, फिर भी बहुत भूल हो जाती हैं। परन्तु भगवान् सब काम अन्धेरे ही में करते हैं, फिर भी कहीं भूल नहीं हो सकती। यही रचना में विशेषता है।

क्या ईश्वर साकार है ?

६. नहीं, क्योंकि जो वस्तु बनी या जन्मी है, वह अवश्य बिगड़ेगी। साकार पदार्थ सीमित होता है, परन्तु भगवान् तो सर्वव्यापक है, सर्वव्यापक निराकार ही हो सकता है। भगवान् विशाल है, अतः उसकी विशालता उसकी रचना में भी झलकती है। जैसे धरती ने किसी को अन्न देने से इन्कार नहीं किया, उसके जल ने किसी को जीवन देने से इन्कार नहीं किया, उसकी वायु ने किसी को प्राण देने से इन्कार नहीं किया, उसके सूर्य ने किसी को प्रकाश देने से इन्कार नहीं किया। उस व्यापक एवं विशाल को साकार कहकर, हम उसे छोटा करने का अपराध करते हैं। वह महान् है, उसकी रचना में महानता झलकती है और छलकती है। उस महान् का सब कुछ महान् है क्योंकि वह निराकार है।

ईश्वर, जीव, प्रकृति

७. ईश्वर की बनाई हुई सृष्टि होने से कई सृष्टि को भी ईश्वर मान लेते हैं। लोहार ट्रंक पेटी को बनाता है, लोहे को नहीं। हलवाई मिठाई को बनाता है, अन्न घी खाण्ड को नहीं। अतः समझ लेना चाहिए कि सृष्टि में तीन पदार्थ अनादि हैं, जिन्हें ईश्वर जीव और प्रकृति कहते हैं। जिसने वस्तुओं को बनाया वह ईश्वर है, जिससे बनाया वह प्रकृति है, जिसके लिए बनाया वह जीव है। मानो हलवाई ''ईश्वर है, अन्न, घृत खाण्ड ''प्रकृति'' है और खाने वाले ''जीव'' हैं। हमारा शरीर प्रकृति है, जिसके लिए बना 'जीव' है और जिसने बनाया ''ईश्वर'' है। जैसे भगवान् ने सूर्य को बनाया, जिससे बनाया वह प्रकृति (परमाणु) है जिसके, लिए बनाया, वह ''जीव'' है। ''बनी वस्तु जहां बनाने वाले का पता देती है, वहां यह भी बताती है कि इसका कोई उपयोग करने वाला भी है। अतः तीन पदार्थों को अनादि मानना सार्वजनिक सार्वकालिक सत्य है।''

मनुष्य सृष्टिकर्त्ता नहीं हो सकता

८. इस युग में ऐसे लोगों की कमी नहीं, जो ईश्वर को सृष्टिकर्त्ता नहीं मानते, वे मनुष्यों को ही भगवान् माने बैठे हैं। वे कहते हैं सृष्टि अपने आप बन गई, परन्तु जो बनती है वह अवश्य बिगड़ती है। जड़ वस्तु एक ही काम कर सकती है, या तो बनती ही रहे या बिगड़ती ही रहे। विपरीत गुण होने का मतलब किसी का हस्तक्षेप है, उसे ही ईश्वर कहते है, जो निर्माण गति और संहार करता है। एक युवक ने कहा कि जब भगवान् निराकार हैं तो उसके हाथ पांव हो ही नहीं सकते परन्तु संसार में सब कार्य हाथ पांव आदि से ही होते हैं, अतः ईश्वर है ही नहीं। मैंने कहा बेटा यदि पांव और हाथ के बिना कोई कार्य नहीं हो सकता तो तुम जब भोजन करते हो तो उसका रस शरीर में बनता है, खून बनता है, हड्डी आदि बनते हैं, बताओ किस हाथ पांव से काम लिया ? कौन–सा बिजली का बटन दबाया ? दिन रात श्वास चलता है, बताओ तुम इसमें क्या करते हो? मनुष्य यदि कुछ कर सकता होता तो किसी को मरने ही न देता। बेटा हाथ पांव से शरीर के बाहर के कार्य होते हैं, जैसे बाल्टी को उठाना, कपड़े धोना, चलना आदि–आदि परन्तु शरीर के अन्दर के कार्य ''आत्मा'' सब बिना हाथ पांव के अर्थात् बिना किसी सहायता के कर सकता है। वैसे ही ईश्वर सर्वव्यापक होने से, कोई भी पदार्थ उससे बाहर न होने के कारण, सारी सृष्टि का कार्य बिना हाथ पांव के कर लेता है।

ध्यान कैसे करें ?

९. प्रायः लोग प्रश्न किया करते है कि जब कोई वस्तु सामने ही नहीं है तो ध्यान कैसे करें? कई लोगों ने ध्यान करने के लिए मूर्तियाँ बनाईं, परन्तु मूर्तियों में ध्यान हो ही नहीं सकता, क्योंकि जो पदार्थ सामने होता है, उसका ध्यान नहीं दर्शन होता है। ध्यान उसका ही होता है, जो निराकार है। बच्चे जब पाठ भूल जाते हैं तो अध्यापक कहा करते हैं, बेटा ! ध्यान करो, क्योंकि शब्द की शक्ल नहीं होती। मूर्तिपूजा करने वालों को भी जब अन्दर से आनन्द आने लगता है, आंखें बन्द कर लेते हैं, क्योंकि ईश्वर का विषय आंखों का नहीं, ''आत्मा'' का है। अतः ईश्वर का विषय भौतिक नहीं, आध्यात्मिक है, अतः ईश्वर की अनुभूति आत्मा से ही हो सकती है।

ध्यान कहां करें

१०. कई लोग ध्यान के स्थान पर पूजा भी करते हैं। परन्तु ध्यान रखें, पूजा माता पिता, गुरु, अतिथि, गाय आदि की हुआ करती है, क्योंकि पूजा का अर्थ पूजा होती है बाहर से और उपासना होती है अन्दर से। अतः प्रभु का मन्दिर (आत्मा का निवास स्थान) हृदय देश ही है। अतः भगवान् कृष्ण गीता १८–७१ में कहते हैं, ''ईश्वरः सर्वभूतानाम् हृद्देशे अर्जुन तिष्ठति।'' इसलिए ईश्वर का मिलन वहीं होगा, जहां आत्मा भी हो। ध्यान का स्थान हृद्देश अर्थात् हृदय से ब्रह्मरन्ध्र तक कहा गया है। अतः ध्यान भी यहीं करें।

ध्यान क्यों करें ?

११. क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अच्छा बनना चाहता है ''यश'' चाहता है। जैसी संगत वैसी रंगत। यह एक मौलिक सच्चाई है कि हम यदि फल वाले की दुकान पर ही जायें तो सुगन्ध से भर जायेंगे। ठीक इसी प्रकार भक्ति से जीवन में सुगन्ध आती है। भगवान् से प्यार करने वाले सब के प्यारे होते हैं। भगवान् की संगत से, उसकी प्रेरणा, से, उसकी कृपा से मनुष्य ''पवित्र'' होकर गुणों से भर जाता है। ''पवित्रता'' जीवन का मूल और भक्ति–जीवन का फूल है। अतः ध्यान करें, और फूल बनें।

१२. भक्ति पवित्र होकर नित्य करनी चाहिये, क्योंकि भगवान् नित्य और पवित्र है, अतः नित्य का नित्य से ही मिलन हो सकता है। समझने की बात यह है कि आत्मा और परमात्मा में विशेष अन्तर है। आत्मा अल्पज्ञ और परमात्मा सर्वज्ञ है, आत्मा पुरुष और परमात्मा पुरुषोत्तम हैं, आत्मा ससीम और परमात्मा असीम हैं। यह गणना नहीं हो सकती। अन्त में यही कहना है कि आत्मा है ''आनन्द'' का भिखारी, और परमात्मा हैं आनन्द के भण्डारी।

—आर्यकुटि, धूरी १४८०२४,
(पंजाब-भारत)

सार्वदेशिक सभा द्वारा चारों दर्शनों एवं संस्कार विधि का पुनर्प्रकाशन

भाष्यकार तर्क शिरोमणि – स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

1. वेदान्त दर्शन	– पृष्ठ 232	– मूल्य 100 रुपये
2. वैशेषिक दर्शन	– पृष्ठ 248	– मूल्य 100 रुपये
3. न्याय दर्शन	– पृष्ठ 240	– मूल्य 100 रुपये
4. सांख्य दर्शन	– पृष्ठ 156	– मूल्य 80 रुपये
5. संस्कार विधि	– पृष्ठ 278	– मूल्य 90 रुपये

बढ़िया कागज, सुन्दर प्रिंटिंग व आकर्षक टाइटल के साथ 25 प्रतिशत छूट पर सभा कार्यालय में उपलब्ध है।

प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
''दयानन्द भवन'' 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2
दूरभाष : 011-23274771, 42415359

पृष्ठ 1 का शेष

आधुनिक युग के क्रांतिकारी पुरोधा थे महर्षि दयानन्द – आचार्य उमेश यादव

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द महान् समाज सुधारक थे – रविन्द्र रेनुकुंटा

सभी समस्याओं का समाधान वेद में है – कृष्ण चोपड़ा

महर्षि दयानन्द सरस्वती महान् दार्शनिक थे – वेंकटा चलन मुरुगन

आर्य समाज के सिद्धान्त मानव मात्र के लिए उपयोगी हैं – चमन लाल 'मेयर'

समाज को समझना है तो ऋषि दयानन्द जी के जीवन को समझो और ऋषि दयानन्द जी के जीवन को समझना हो तो आर्य समाज की उपलब्धियों को समझना होगा। यदि हम ऋषि के जीवन पर प्रकाश डालने लगेंगे तो मालूम पड़ेगा कि आर्य समाज के संस्थापक का जीवन तपस्वी और तेजस्वी रहा है तो उन्होंने जिस संस्था की स्थापना की है उसकी कितनी बड़ी–बड़ी उपलब्धियाँ होंगी। यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। एक बहुत बड़े संन्यासी हुए स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती जी महाराज जो इलाहाबाद विश्वविद्यालय में रसायन विज्ञान में हेड ऑफ द दिपार्टमेंट रहे। उन्होंने बताया था कि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी कोई साधारण मानव नहीं थे। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने जो क्रांतिकारी कार्य करके दिखाया वैसा इतिहास में दूसरा उदाहरण नहीं मिलता। महर्षि दयानन्द सरस्वती अद्भुत प्रतिभा के धनी थे उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश जैसा कालजयी ग्रन्थ साढ़े तीन महीने में लिखवाकर तैयार कर दिया था। जो एक आश्चर्यजनक कार्य है। क्योंकि सत्यार्थ प्रकाश में लगभग 1577 श्लोक एवं मंत्र उद्धृत किये गये हैं तथा दुनिया के सभी मत एवं सम्प्रदायों की तर्कपूर्ण समालोचना की गई है और वैदिक सिद्धान्तों को प्रश्नोत्तर शैली में तर्क के आधार पर प्रतिष्ठित किया गया है। यह कार्य उन्होंने किसी लाइब्रेरी में बैठकर नहीं किया बल्कि अपने प्रचार कार्य के दौरान जहाँ पर वे ठहरे वहीं पर लेखन कार्य भी साथ–साथ चलता रहा। बनारस के डिप्टी कलेक्टर राजा जयकिशन दास ने स्वामी दयानन्द जी को चन्द्रशेखर शर्मा नाम के एक लेखक दिये जिन्होंने स्वामी जी द्वारा बोले गये व्याख्यानों एवं विचारों को लिपिबद्ध किया। बाद में पं. ज्वाला प्रसाद तथा पं. भीमसेन भी उनके कार्य में सहयोगी बनें। इसी प्रकार स्वामी जी ने वेद भाष्य करने के विचार से अयोध्या जाने का मन बनाया किन्तु उन्हें वहां के पण्डितों के विरोध के कारण सफलता नहीं मिली। किन्तु बाद में अयोध्या के एक मात्र कृष्ण मंदिर के पुजारी ने स्वामी जी को सादर आमंत्रित किया और उनके मंदिर परिसर में रहकर लेखन कार्य करने का प्रस्ताव रखा। स्वामी जी ने उस मंदिर में प्रवास किया और लगभग 26 दिन में ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका जैसा ग्रन्थ लिखकर तैयार कर दिया। महर्षि दयानन्द की प्रतिभा, ओज, तप एवं त्याग निःसंदेह अद्वितीय था। महर्षि दयानन्द जी ने भारत की आजादी के लिए भी अनेकों क्रांतिकारियों को प्रेरित किया और अपनी ऐतिहासिक भूमिका निभाई। महर्षि दयानन्द जी महान् दार्शनिक थे। स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि जब योगी अरविन्द से पूछा गया कि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के बारे में आपकी मान्यता क्या है तो उन्होंने कहा कि जिस प्रकार हिमालय पर्वत की सबसे ऊँची चोटी एवरेस्ट है उसी प्रकार सभी दार्शनिकों में स्वामी दयानन्द सरस्वती सर्वोच्च शिखर पर प्रतिष्ठित हैं। स्वामी दयानन्द जी ने 36 साल की उम्र में अष्टाध्याय को पढ़ लिया और उसके बाद वेद का अध्ययन किया और हरिद्वार के मेले में पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई। वे केवल एक धार्मिक नेता नहीं थे, बल्कि आर्थिक असामनता पर अपने विचार रखे, दलितों के ऊपर हुए अत्याचारों को नजदीक से देखा, देवदासी प्रथा, बालविवाह प्रथा, सतीप्रथा आदि कुरीतियों को नजदीक से देखा और प्रहार करते हुए आर्य समाज संगठन की स्थापना की। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का कहना था कि यदि कोई विचारधारा वेद पर आधारित है तो मान्य है अन्यथा अमान्य है। उन्होंने वेद को अपनी विचारधारा का मूल स्वीकार किया। ऐसे महान् ऋषि की 200वीं जन्म जयन्ती को पूरे विश्व में बड़े उत्साह के साथ मनाया जा रहा है। मैं इंग्लैण्ड की समस्त आर्य समाजों विशेषकर आर्य समाज बर्मिंघम (वेस्ट मिडलैंड) के पदाधिकारियों को इस ऐतिहासिक आयोजन के लिए हृदय से साधुवाद एवं बधाई देना चाहता हूँ। उन्होंने यह भव्य आयोजन करके निःसंदेह एक इतिहास बना दिया है। इस समारोह की व्यवस्था एवं विशाल जनसमूह की उपस्थिति को देखकर हम सभी लोग आनन्दित अनुभव कर रहे हैं।

सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव जी ने अपने उद्बोधन में महर्षि दयानन्द जी की विचारधारा तथा वैदिक सिद्धान्तों को वर्तमान समय में भी प्रासंगिक बताया। उन्होंने कहा कि पूरे विश्व में विकास का जो मॉडल अपनाया जा रहा है वह विनाश की तरफ ले जाने वाला है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने भोगवाद की बजाय त्याग की संस्कृति को अपनाने पर बल दिया था। जीवन के हर क्षेत्र में जब त्याग को लोग आचरण में अपना लेंगे, व्यवहार में स्वीकार कर लेंगे तो अनेक समस्याओं का समाधान स्वतः होता चला जायेगा। स्वामी दयानन्द सरस्वती की विचारधारा पूरे विश्व के लिए कल्याणकारी थी। उन्होंने सभी प्रकार की संकीर्णताओं से ऊपर उठकर मानव मात्र के कल्याण की कल्पना आर्य समाज के उद्देश्य में निर्धारित की। ऐसे महर्षि की 200वीं जन्म जयन्ती के अवसर पर हम सभी को जन–जन तक महर्षि के विचारों को पहुंचाने का संकल्प

लेना चाहिए और आर्य समाज के संगठन को और मजबूत करना चाहिए।

आर्य समाज बर्मिघम के प्रधान श्री रविन्द्र रेनुकुंटा ने अपने स्वागत भाषण में उपस्थित जन–समूह का अभिनन्दन करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को एक महान् समाज सुधारक बताया और उन्होंने कहा कि समाज में फैली सभी कुरीतियों, अन्धविश्वास तथा पाखण्डों के विरुद्ध महर्षि दयानन्द जी ने प्रचण्ड अभियान चलाया था और उसी के लिए आर्य समाज की स्थापना की थी।

आर्य समाज के संरक्षक डॉ. कृष्ण चोपड़ा जी ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि वेदों में सभी समस्याओं का समाधान है। वेद संसार में ज्ञान के सबसे प्राचीन स्रोत हैं। वेद का ज्ञान ईश्वर के द्वारा सृष्टि के प्रारम्भ में चार ऋषियों के हृदय में प्रकट किया गया था और वेद में जीवन से जुड़े सभी पहलुओं की चर्चा विद्यमान है। पूरा ज्ञान–विज्ञान सूत्र रूप में वेद में उपलब्ध है। इसी ज्ञान को आगे बढ़ाने का कार्य महर्षि दयानन्द जी ने अपने जीवन में किया और उन्होंने वेदों की ओर लौटो का नारा संसार को दिया।

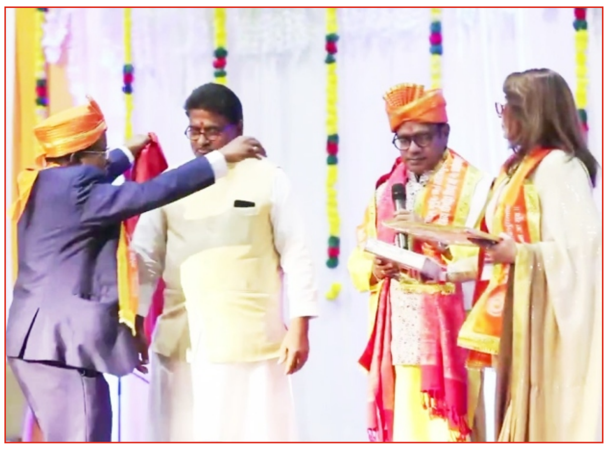

भारत के कांसुलेट जनरल डॉ. वेंकटा चलन मुरुगन ने भारत सरकार की ओर से जहां महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रति अपने श्रद्धा एवं भावनापूर्ण विचार प्रस्तुत किये वहीं आयोजकों को विशेष बधाई दी।

बर्मिंघम के मेयर श्री चमनलाल जी ने भी इस अवसर पर आर्य समाज की उपादेयता पर प्रकाश डाला और उन्होंने कहा कि आर्य समाज किसी भी प्रकार की जाति, पाति, मजहब, सम्प्रदाय या गरीब–अमीर का भेद नहीं मानता, बल्कि मानव मात्र के कल्याण की बात करता है। जो अत्यन्त आवश्यक है।

सम्पूर्ण आयोजन के संयोजक एवं वैदिक विद्वान् डॉ. आचार्य उमेश यादव ने जहां महर्षि दयानन्द और आर्य समाज की विशेष घटनाओं तथा उपलब्धियों पर प्रकाश डाला, वहीं पर इस विशाल आयोजन की सफलता में जिन–जिन महानुभावों का विशेष योगदान रहा उनके प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। आचार्य जी ने बताया कि हमलोग जीरो से चले और आज इस विशाल आयोजन को सफलता के साथ सम्पन्न होते देखकर अभिभूत हैं। उन्होंने कहा कि आर्य समाज बर्मिंघम के संरक्षक डॉ. कृष्ण चोपड़ा एवं प्रधान श्री रविन्द्र रेनुकुंटा के कुशल नेतृत्व में समाज की पूरी कार्यकारिणी एवं सभी ट्रस्टीगण ने दिन–रात एक करके परिश्रम किया जिसके कारण इस विशाल कार्यक्रम को हमलोग सफल कर पाये। कार्यक्रम की सफलता में जिन प्रमुख कार्यकर्ताओं ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई उनमें मुख्यरूप से श्री निशान्त सैनी, डॉ. रोशन भुजियावन, श्री भागू भाई, श्री विपुल मिस्त्री, श्री राजीव बाली, श्री अशोक बख्शी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। जिन महानुभावों का विशेष आर्थिक सहयोग रहा उनमें डॉ. कृष्ण चोपड़ा, श्री गौरव रॉयल, डॉ. ललित कुमार एवं परिवारजन, श्री आलोक व श्री सुकेतु यादव, श्री विनोद शर्मा, श्री रविन्द्र रेनुकुंटा, डॉ. मोना खुराना, श्री निशान्त सैनी तथा अन्य महानुभावों के नाम उल्लेखनीय हैं। आचार्य उमेश जी ने स्वामी आर्यवेश जी तथा प्रो. विट्ठलराव आर्य जी के अतिरिक्त भारत से तथा हालैण्ड से पधारे सभी आर्य नेताओं का हृदय से धन्यवाद किया और कहा कि आपलोगों की गरिमामयि उपस्थिति से इस आयोजन की सफलता में चार चांद लग गये। उन्होंने हालैण्ड और लन्दन से पधारे सभी विद्वान् वेद पाठियों विशेषतया डॉ. ताना जी आचार्य, डॉ. रामचन्द्र शास्त्री, आचार्य वरुण शास्त्री, आचार्य नरेदव यजुर्वेदी, आचार्य ओम प्रकाश सामवेदी, आचार्य विजय प्रकाश शास्त्री एवं पण्डित देवानन्द भघेलू आदि का वेद पाठ करने एवं यज्ञ को सफल बनाने में किये गये सहयोग के लिए हृदय से धन्यवाद दिया।

इस अवसर पर सभी विद्वानों एवं अतिथियों को स्मृति चिन्ह एवं शॉल भेंटकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम भव्यता के साथ उत्साह एवं उमंग के वातावरण में सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज के उद्भट्ट विद्वान् आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी की स्मृति में दिनांक 14 मई, 2024 को आर्य समाज ग्रेटर कैलाश, पार्ट–2, नई दिल्ली में शांति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा का आयोजन सम्पन्न

वेद के सच्चे संवाहक थे आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी – स्वामी प्रणवानन्द

आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी का कोई मुकाबला नहीं – डॉ. योगानन्द शास्त्री

विलक्षण प्रतिभा के धनी थे आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी – चन्द्रशेखर शास्त्री

स्वामी आर्यवेश जी ने इंग्लैण्ड से भेजा शोक प्रस्ताव

आर्य समाज के उद्भट्ट विद्वान् आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी का गत 11 मई, 2024 को असमय निधन हो गया। उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सैकड़ों आर्यजनों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य पुरोहित सभा के वरिष्ठ पुरोहितों एवं विद्वानों ने पूर्ण वैदिक रीति से अन्त्येष्टि संस्कार सम्पन्न कराया। अन्त्येष्टि संस्कार में अनेक आर्य विद्वानों, पुरोहितों एवं आर्य समाज के पदाधिकारियों के अतिरिक्त श्रोत्रिय परिवार के सदस्य उपस्थित थे। उनके सुपुत्र दक्ष श्रोत्रिय ने नम आंखों से अपने पूज्य पिता जी के पार्थिव शरीर को मुखाग्नि देकर अन्तिम विदाई दी। आचार्य श्रोत्रिय जी की स्मृति में भव्य शांति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा का आयोजन 14 मई, 2024 को आर्य समाज ग्रेटर कैलाश, पार्ट–2, नई दिल्ली के सभागार में सम्पन्न हुआ। स्मृति सभा की अध्यक्षता अनेक गुरुकुलों के संस्थापक स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने की, स्मृति सभा में मुख्यरूप से दिल्ली के पूर्व विधानसभा अध्यक्ष डॉ. योगानन्द शास्त्री जी, आर्य समाज के भामाशाह ठा. विक्रम सिंह जी, राष्ट्र निर्माण पार्टी के अध्यक्ष डॉ. आनन्द कुमार जी पूर्व आई.पी.एस., मानव सेवा प्रतिष्ठान के कार्यकारी अध्यक्ष श्री रामपाल शास्त्री जी, दिल्ली सभा के मंत्री श्री विनय आर्य जी, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी, आचार्य मेघश्याम जी, डॉ. महेश विद्यालंकार जी, आचार्य जयेन्द्र जी (नोएडा), श्रीमती गायत्री मीणा जी, श्री देवेश प्रकाश जी, श्री शैलेश प्रकाश जी, आचार्य वीरेन्द्र विक्रम जी के अतिरिक्त दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश तथा उत्तराखण्ड आदि क्षेत्रों से सैकड़ों आर्य महानुभावों ने श्रद्धांजलि सभा में सम्मिलित होकर आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी को अपनी ओर से विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की।

सर्वप्रथम आर्य समाज ग्रेटर कैलाश पार्ट–2 के धर्माचार्य पण्डित गणेशदत्त त्रिपाठी जी के ब्रह्मत्व में शांति यज्ञ सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात् श्रद्धांजलि सभा का कार्यक्रम सभागार में प्रारम्भ हुआ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी पूर्व निर्धारित आर्य समाज के कार्यक्रम में इंग्लैण्ड के बर्मिंघम शहर में होने के कारण इस श्रद्धांजलि सभा में उपस्थित नहीं हो सके। परन्तु उन्होंने अपने शोक संदेश के माध्यम से वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी को विनम्र श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि आचार्य जी देश–विदेश में जाकर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के विचारों और वैदिक सिद्धान्तों को अपनी प्रखर वाणी से लोगों के बीच प्रसारित करने में जीवन के आखिरी सांस तक लगे रहे। आचार्य जी के निधन से जहां उनके परिवार को गहरा आघात लगा है, वहीं आर्य समाज एवं राष्ट्र की भी अपूर्णीय क्षति हुई है। आचार्य जी एक सुलझे हुए वैदिक विद्वान्, शास्त्रार्थ महारथी एवं वैदिक प्रखर वक्ता थे। आचार्य जी हमेशा वेद आधारित बातों को प्रमुखता से रखते थे और तर्क के आधार पर अपनी बात को लोगों के मस्तिष्क में उतार देते थे। उनके साथ लगभग 45 वर्ष से मेरा आत्मीय सम्बन्ध था। मैं जब भी आर्य समाज के कार्यक्रमों में उन्हें आमंत्रित करता था तो अत्यधिक व्यस्त होते हुए भी उन्होंने कभी आने से मना नहीं किया। वे मुझे अत्यन्त सम्मान एवं स्नेह देते थे और सदैव उत्साहवर्द्धन करते थे। उनके जाने से वैदिक सिद्धान्तों की एक मजबूत आवाज सदा के लिए मौन हो गई। ऐसे प्रखर विद्वान् वक्ता के अचानक चले जाने से मुझे व्यक्तिगत रूप से गहरा आघात लगा है। इस दुःख की घड़ी में सम्पूर्ण आर्य जगत की संवेदनाएं आचार्य जी के परिवार के साथ जुड़ी हैं। मैं व्यक्तिगत रूप से पूरे परिवार के प्रति अपनी संवेदना एवं सांत्वना प्रकट करता हूँ।

श्रद्धांजलि सभा में अपने उद्गार प्रकट करते हुए अनेक गुरुकुलों के संस्थापक स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज ने आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी को सही मायने में पण्डित बताया। उन्होंने कहा कि महाभारतकाल में पण्डित की जो व्याख्या की गई है उस पर वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी खरे उतरते हैं। वे वेद के सच्चे संवाहक थे। आचार्य जी के साथ हमारा कोई 5–10 साल का सम्बन्ध नहीं रहा बल्कि कई दशकों से मेरा सम्बन्ध रहा है। आर्य समाज के पास इतना बड़ा विद्वान् वर्तमान में कोई नहीं है। परमपिता परमात्मा से मेरी यही प्रार्थना है कि हम सभी को वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी जैसा कोई विद्वान् दें जिससे उनकी कमी को पूरा किया जा सके। उन्होंने कहा कि शेष पृष्ठ 7 पर

हृदय के लिए घातक है कोलेस्टेराल

- राजगोपाल एस वर्मा

कोकीन और कैफीन के बाद लोगों को जिस चीज से खौफ खाना चाहिए वह कोलेस्टेराल है, ऐसा चिकित्सकों और शोधकर्ताओं का मानना है। कारण साफ है, शरीर में कोलेस्टेराल नामक इस रसायनिक तत्व की जरूरत से अधिक मात्रा भले–चंगे व्यक्ति को हृदय रोगी बनाने और असमय मौत की ओर धकेलने की ताकत रखती है।

मानव शरीर में कोलेस्टेराल की कुल मात्रा जीवन भर करीब १५० ग्राम या पांच पौंड के आसपास रहती है। इसका ज्यादातर हिस्सा मस्तिष्क, स्नायुओं, मांसपेशियों और वसीय ऊतकों में रहता है। कुल मात्रा में से करीब २० ग्राम कोलेस्टेराल शरीर की मेटावालिक प्रक्रियाओं में सक्रिय भूमिका निभाता है जो खास तौर से यकृत, रुधिर, प्लाज्मा और अन्तड़ियों में रहता है। कोलेस्टेराल के विषय में एक खास बात यह है कि यह विशिष्ट रसायन केवल जीव–जंतुओं के शरीर में ही पाया जाता है, पेड़–पौधे ऐसे किसी रसायन से वास्ता नहीं रखते।

मांसाहारी लोगों के शरीर में कोलेस्टेराल की जरूरी मात्रा उनके आहार से आमाशय के जरिए पहुंचती रहती है। कुछ मात्रा में शरीर खुद कोलेस्टेराल का उत्पादन करता है, संश्लेषण के जरिए शाकाहारी लोगों में कोलेस्टेराल की पूरी मात्रा शरीर स्वयं ही उत्पादित करता रहता है। जो लोग मिश्रित आहार लेते हैं उन्हे कोलेस्टेराल आहार और शरीर में सिंथेसिस दोनों ही प्रक्रियाओं से मिलता रहता है। यदि आहार से शरीर को मिलने वाले कोलेस्टेराल की मात्रा जरूरत से अधिक हो तो शरीर सिंथेसिस की प्रक्रिया का इस तरह से समायोजन करता है कि उसकी कुल मात्रा स्थिर बनी रहे। शरीर की कोशिकाओं द्वारा कोलेस्टेराल बनाने की प्रक्रिया बहुत ही जटिल है जिसमें बारी–बारी से और बिजली की सी तेजी से अनगिनत इन्जाइम्स की प्रक्रिया होती रहती है तब जाकर एसीटेट नामक एक सामान्य कोशिकीय रसायन से कोलेस्टेराल का निर्माण होता है।

कोलेस्टेराल को शरीर में मौजूद एक 'खलनायक' की संज्ञा देना उसके साथ अन्याय करना होगा। वास्तव में यह शरीर के लिए जरूरी एक 'गुरु अणु' हैं जो निश्चित मात्रा और निर्धारित रूप में मानव के लिए बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कोलेस्टेराल की कोशिकाओं की दीवारों के निर्माण में एक जिम्मेदार भूमिका है। वहां यह एक ऐसे गेट कीपर का काम करता है जिसकी ड्यूटी कोशिकाओं के लिए जरूरी और गैर जरूरी तत्वों की पहचान कर उनके आवागमन को संचालित करना है, दूसरे शब्दों में कहें तो यह जीवन को अपनी मुट्ठी में रखे हुए हैं।

इतना ही नहीं कोलेस्टेराल शरीर रूपी इमारत की आधार की ऐसी ईंटों का काम करता है कि इसके बिना जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती। यह शरीर के कई महत्वपूर्ण अंगों में बनने वाले रसायनों को भी सामग्री उपलब्ध कराता है। शरीर की विभिन्न प्रक्रियाओं के नियमन (रेग्यूलेशन) के लिए अधिवृक्त ग्रंथियों से कार्टिसोल का उत्पादन, आहार से वसा के अवशोषण में सहायता के लिए यकृत में पित्त का निर्माण, यौन ग्रंथियों और यौन कार्यप्रणाली की परिपक्वता के प्रतीक यौन हारमोनों के डिंब ग्रंथियों और अंडकोशों में उत्पादन कोलेस्टेराल की मदद के बिना होना संभव ही नहीं है। कोलेस्टेराल के जितने अणु मानव शरीर में प्रविष्ट होते हैं उनमें से अधिकांश अंततः पित्तीय अम्ल बनकर मल के रूप में शरीर से बाहर निकल जाते हैं जिनका स्थान कोलेस्टेराल के नए अणु ले लेते हैं। यह अनवरत प्रक्रिया प्रतिदिन जारी रहती है।

कोलेस्टेराल और धमनीय हृदय रोगों में रिश्ते का अचानक ही पता नहीं लगा। पिछले लगभग ७५ सालों से इस संबंध में धीमी गति से लेकिन गहन शोध के परिणामस्वरूप ही वैज्ञानिक कोलेस्टेराल के इस खतरनाक कुप्रभाव के विषय में एकमत हो पाए हैं। हमारे रक्त में कोलेस्टेराल तीन विभिन्न रूपों में प्रवाहित होता रहता हैः– वेरी लो–डेंसिटी लिप्पोप्रोटीन्स (एल.डी.एल.) लो-डेंसिटी लिप्पोप्रोटीन्स (एल.डी.एल) एवं हाई–डेंसिटी लिप्पोप्रोटीन्स। इनमें से प्रथम अर्थात अत्यंत कम घनत्व वाले लिप्पोप्रोटीन्स से हृदय रोगों का खतरा नहीं के बराबर है लेकिन एलडीएल या कम घनत्व वाले लिप्पोप्रोटीन्स कोलेस्टेराल को निश्चित रूप से इस जानलेवा प्लांट का अपराधी करार दिया जा सकता है। यह आरोप लंबे समय तक किए गए विभिन्न सर्वेक्षणों तथा क्लीनिकीय परीक्षणों के आधार पर लगाया गया है।

इस स्थिति के विपरीत कोलेस्टेराल का उच्च घनत्व लिप्पोप्रोटीन्स वाला अंश हृदय रोगों से बचाव का काम करता है। हमारी कोशिकाएँ जिस प्रक्रिया से कम घनत्व लिप्पोप्रोटीन्स के अणुओं की पहचान कर उन को चिपकाती हैं (रिसेप्टर प्रक्रिया) उसके विस्तृत अध्ययन के लिए अमेरिका के दो वैज्ञानिकों माइकेल ब्राउन तथा जोसेफ गोल्डस्टिन को वर्ष १९८५ के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

उन्होंने दिखाया था कि स्वस्थ स्थिति में कम घनत्व लिप्पोप्रोटीन द्वारा कोशिकाओं में भेजा गया कोलेस्टेराल उच्च घनत्व वाले लिप्पोप्रोटीन से हटाए गए कोलस्टेराल को स्टीक ढंग से संतुलित बनाए रखता है। यदि किसी तरह रक्त में कम घनत्व वाले लिप्पोप्रोटीन की मात्रा बहुत अधिक हो जाए तो कोशिकाओं में कोलेस्टेराल का जमाव होने लगता है। यह जमाव जब हृदय की धमनियों में होने लगता है तो हृदय की सामान्य रक्त आपूर्ति में रुकावट आने लगती है और शुरू होता है एथिरोस्लिरासिस नामक रोग। नतीजतन हृदय की मांसपेशियों में रक्त प्रवाह संकुचित होता जाता है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति मामूली से शारीरिक श्रम से भी सीने में दर्द की शिकायत करने लगता है। इसका परिणाम होता है हृदय आघात अथवा मायोकार्डियल इन्फार्कशन नामक स्थिति का विकसित होना जिसमें पहले से ही संकुचित धमनियों में रक्त के थक्के जमने लगते हैं जिससे अचानक हृदय को रक्त की सप्लाई बंद हो जाती है और व्यक्ति बिना किसी चेतावनी के मृत्यु का शिकार बन जाता है।

कोलेस्टेराल के साथ–साथ इस रोग को पनपाने में कई अन्य स्थितियाँ भी जिम्मेदार हैं। आयु के बढ़ाव के साथ–साथ यह खतरा बढ़ता जाता है, साथ ही इसकी संभावनाएं सामान्यतः पुरुषों में ही होती है। उच्च रक्तचाप के रोगियों तथा धूम्रपान के शौकीनों को हृदय रोगों की चपेट में आने का खतरा अपेक्षाकृत कहीं अधिक होता है

शरीर में कोलेस्टेराल की उचित मात्रा बनाए रखने तथा इस तरह विभिन्न हृदय रोगों से दूरी बनाए रखने के लिए उपहार के साथ–साथ व्यक्ति को अपने संतुलित खाने–पीने की आदतों तथा बेहतर दिन–चर्या को अपनाना चाहिए। नियमित रूप से व्यायाम करने से लोगों के लिप्पोप्रोटीन स्तर में जरूरी सुधार देखा गया है। हृदय रोगों के कगार पर खड़े लोगों को कम–वसा वाले दूध तथा कम सामिष भोजन की सलाह मात्र देकर धमनीय हृदय रोगों के चंगुल से बचाया जा सकता है।

कम–घनत्व लिप्पोप्रोटीन कोलेस्टेराल के शिकार बच्चों का उपचार शीघ्रता से तथा सावधानीपूर्वक किया जाना जरूरी है। इस संबंध में सावधानी रखने की आवश्यकता इसलिए है कि कोलेस्टेराल का नियमित मात्रा स्तर बनाए रखने के लिए बच्चों को दी जाने वाली औषधियां और आहार संबंधी प्रतिबंधों का उनकी शारीरिक वृद्धि पर प्रतिकूल असर पड़ता है। दो से पांच वर्ष की आयु के बच्चों के मस्तिष्क और तंत्रिका तंत्र के बेहतर विकास के लिए पर्याप्त वसा और कोलेस्टेराल की बेहद जरूरत रहती है। छह वर्ष के बाद बच्चों को धीरे–धीरे कम वसा तथा कम कोलेस्टेराल का आहार खिलाना चाहिए।

कोलेस्टेराल तथा धमनीय हृदय रोगों के रिश्तों पर काम कर रहे शोधकर्ताओं का कहना है कि २० वर्ष से अधिक आयु वाले सभी पुरुष महिलाओं को अपनी सीरम कोलेस्टेराल स्तर पर निगाह रखनी चाहिए। २०० से २३६ मिलीग्राम प्रति डेसीलीटर स्तर वाले व्यक्ति को 'बार्डर–लाइन हाई' केस माना जाता है जिनका लिप्पोप्रोटीन विश्लेषण करने के बाद उपचार किया जाता है। १६० मिलीग्राम प्रति डेसीलीटर या अधिक एल डी एल–कोलेस्टेराल स्तर के लोगों को उचित उपचार देना अति आवश्यक है। साथ ही १३०–१५० मिलीग्राम प्रति डेसीमीटर स्तर वाले व्यक्तियों के जीवन–वृत्त तथा उनकी आहार संबंधी आदतों को जानने के बाद उनको भी उचित उपचार और लाइफस्टाइल में परिवर्तन कराना आवश्यक माना जाता है।

शोधकर्ताओं का निष्कर्ष है कि कोलेस्टेराल तथा हृदय रोगों से खतरे की संभावनाएं उस स्थिति में अधिकतम हैं जबकिः वह पुरुष हो, उसके परिवार में धमनीय हृदय रोगों का इतिहास रहा हो, वह प्रतिदिन लगभग दस सिगरेट पीता हो, हाइपरटेंशन से पीड़ित हो, एच.डी.एल.–कोलेस्टेराल सांद्रता अत्यंत कम (३५ मिलीग्राम प्रति डेसीमीटर से कम) हो, व्यक्ति मधुमेह का रोगी हो और उसे मोटापा (सामान्य से ३० प्रतिशत अधिक भार) घेरे हो। चिकित्सक अब सलाह देते हैं कि सभी पुरुष–महिलाओं को अपनी सीरम कोलेस्टेराल स्तर की जानकारी होनी चाहिए जिसके अनुसार उन्हें उचित आहार तथा उपचार की सलाह दी जा सके।

कोलेस्टेराल को लेकर अधिकांश जागरूक लोग जिस तथ्य से पूरी तरह अवगत हो चुके हैं वह है आहार की मदद से एल.डी.एल–कोलेस्टेराल स्तर को घटाने का प्रयास करना। इस संबंध में चिकित्सक ही उपयुक्त सलाह दे सकते हैं लेकिन यह जान लेना चाहिए कि सामान्यतः मांसाहारी आहार और घी तथा मक्खन जैसे उच्च सैच्यूरेटिड फैट युक्त आहार से अधिकतम कोलेस्टेराल मिलता है। आहार में घुलनशील और अघुलनशील फाइबर जैसे सेब और मक्का एवं गेहूं का दलिया व्यक्ति के शरीर में उपयुक्त लिप्पोप्रोटीन स्तर बनाने में सहायक होता है जिससे व्यक्ति स्वस्थ रह सकता है।

यद्यपि शोध से व्यक्ति के आहार तथा कोलेस्टेराल स्तर के तनावपूर्ण रिश्ते की परख की गई है लेकिन इसके अलावा कई अन्य रिश्ते भी हैं, जो व्यक्ति के कोलेस्टेराल स्तर को सामान्य बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। नियमित रूप से व्यायाम द्वारा अपना मोटापा घटाना इसका एक अच्छा तरीका हो सकता है। इसी तरह धूम्रपान त्याग कर हृदय रोगों को दूर रखा जा सकता है। औषधियों के नुस्खे तो चिकित्सक अपने रोगियों को देते ही हैं।

पृष्ठ 5 का शेष

आर्य समाज के उद्‌भट्ट विद्वान् आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी की स्मृति में शांति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा का आयोजन सम्पन्न

वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी की कमी हम सभी को अवश्य ही खलेगी। आज हम सभी उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए उपस्थित हुए हैं, उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि उनके विचारों को आगे बढ़ाने में अपना सहयोग करें।

दिल्ली विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष डॉ. योगानन्द शास्त्री जी ने कहा कि आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी आर्य समाज के किसी भी कार्य को कभी मना नहीं करते थे। उनका ज्ञान अद्‌भुत था, उनका कोई मुकाबला नहीं था। ऐसे ओजस्वी विद्वान् का अचानक चले जाना निश्चित रूप से आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति है। मैं अपनी ओर से उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ तथा परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि परिवारजनों को इस दारूण दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें तथा दिवंगत आत्मा को अपनी शरण में स्थान दें।

आर्य समाज के भामाशाह ठाकुर विक्रम सिंह जी ने कहा कि आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी उम्र में मुझसे काफी छोटे थे, जब मुझसे कोई छोटा चला जाता है तो मुझे घबराहट होने लगती है। आचार्य वेद प्रकाश जी आर्य समाज के उद्‌भट्ट विद्वान् थे। उनके पहनावे बहुत ही सुन्दर और अच्छे होते थे। वे धोती–कुर्ते में बहुत ही सुन्दर लगते थे। वे बहुत ही मिलनसार व्यक्तित्व के धनी थे। वे लाखों में एक थे। एक बार प्रसंगवश मैंने आचार्य जी से कहा कि आप कपड़े कहां से बनवाते हो और जूते कहां से लेते हो तो उन्होंने कहा कि एक है मेरा जानने वाला। उसके बाद कुछ दिन बाद आचार्य जी ने मुझे एक सीट कपड़े और जूते भेंट स्वरूप दिये और आज भी मैं उनके द्वारा दिये गये जूते को पहनकर आया हूँ। उनके उस कृत्य को देखकर मैं गदगद हो गया था। ऐसे विलक्षण प्रतिभा के धनी विद्वान् का हम सबके बीच से चले जाना निःसंदेह अपूर्णीय क्षति है। मैं आचार्य जी के प्रति अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ तथा परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त करता हूँ और आश्वासन देता हूँ कि परिवार को किसी भी प्रकार की कोई आर्थिक तंगी महसूस हो तो वे मुझसे अवश्य ही सम्पर्क करके मुझे सूचित करें।

आर्य समाज ग्रेटर कैलाश, पार्ट–2 के धर्माचार्य श्री गणेशदत्त त्रिपाठी जी ने कहा कि आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी का जीवन यज्ञमय था। वे ईश्वर के प्रति सच्ची भक्ति किया करते थे।

आचार्य वीरेन्द्र विक्रम जी ने कहा कि आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी देदीप्यमान नक्षत्र थे। उनकी यश, कीर्ति सदैव बनी रहेगी। वे अपनी बात पर चट्टान की तरह टिके रहते थे। उनका सान्निध्य मुझे भी मिला, जिससे मैं अपने आपको धन्य मानता हूँ। वे वेद और आर्य समाज के सच्चे प्रहरी थे। वे सिद्धान्त के लिए किसी की परवाह नहीं करते थे। मैं पूरे आर्य समाज ग्रेटर कैलाश पार्ट–1 की ओर से आचार्य जी को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

आचार्य यशपाल जी ने पण्डित वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का अनन्य भक्त बताते हुए अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की।

आचार्य मेघश्याम जी ने कहा कि वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी आर्य समाज के अग्रणी विद्वान् थे। उन्होंने कहा कि मैं विगत काफी समय से उनसे प्रतिदिन बात करता था। वे आर्य समाज के प्राण थे। उनके जैसा विद्वान् अब आर्य समाज के पास नहीं है।

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने कहा कि वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। वे ऐसे विद्वान् थे जिन्होंने अपनी बात हिन्दी, संस्कृति के अलावा अंग्रेजी भाषा में बड़ी बेबाकी से रखते थे। वे जितने बड़े विद्वान् थे उतने ही विनम्र भी थे। आचार्य श्रोत्रिय जी के बच्चों का हौंसला बढ़ाते हुए जीवन–मृत्यु के मर्म को समझाया।

डॉ. जयेन्द्र आचार्य (नोएडा) ने कहा कि आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी ऐसे जादूगर थे जिन्होंने अपनी वाणी से लोगों के दिलों पर राज किया। उनके विचार रखने के तरीके अतुलनीय हैं। वे ऐसे व्यक्ति थे जिनका पक्ष–विपक्ष सभी सम्मान करते हैं। वे एक ऐसे सूर्य थे जो अनेकों दिये जलाकर गये हैं। उनके नाम पर एक शोधशाला बननी चाहिए।

डॉ. वेदपाल जी ने कहा कि आचार्य जी हम सभी को जो लिखकर पुस्तकें दे गये हैं उनसे हमें ज्ञान लेने की आवश्यकता है। उन्होंने आचार्य जी के रोग के सम्बन्ध में विस्तार से बताया और कहा कि मेरा दृढ़ विश्वास है कि आचार्य जी मोक्ष को प्राप्त किये होंगे।

डॉ. महेश विद्यालंकार जी ने कहा कि हम सभी लोग आज उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में अपने–अपने विचार रख रहे हैं। मैं कहना चाहता हूँ कि वे आर्य समाज और स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के वकील थे। वे सदैव सिद्धान्तों की रक्षा के लिए आगे खड़े रहते थे।

श्री विनय आर्य जी ने कहा कि उनके कृतित्व और व्यक्तित्व से सभी भलीभांति परिचित हैं। उन्होंने कहा कि वे कभी भी सत्य से दायें–बायें नहीं गये। अध्ययन और स्वाध्याय को बढ़ाना ही उनको सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

आर्य समाज ग्रेटर कैलाश पार्ट–2 के संरक्षक ने कहा कि आचार्य जी का हमारे आर्य समाज के साथ अटूट सम्बन्ध था। आचार्य जी जैसी वक्तृत्व शैली और विचार किसी अन्य के पास नहीं है। मैं अपनी आर्य समाज की ओर से आचार्य जी को विनम्र श्रद्धांजलि देता हूँ।

गुरुकुल एटा से पधारे श्री मेधाव्रत शास्त्री जी (सुपुत्र स्व. आचार्य देवराज शास्त्री) ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी जैसा विद्वान् मैंने अपने जीवन में नहीं देखा। उन्होंने अपना पूरा जीवन वेद के लिए समर्पित कर दिया। एक घटना बताते हुए कहा कि जब मैं छोटा था तो वे गुरुकुल एटा में आये थे तो उस समय ब्रह्मचारियों में एक कौतुहल था कि आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी आ रहे हैं, उनकी एक झलक पाने के लिए मन में इतना उत्साह था जिसको बयां नहीं किया जा सकता। जब श्रोत्रिय जी मंच पर आये तो ऐसे लग रहा था कि कोई देदीप्यमान नक्षत्र उतर आया हो। आचार्य जी का अचानक असमय चले जाना निःसंदेह आर्य समाज एवं राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति है। मैं उन्हें अपनी विनम्र श्रद्धांजलि देता हूँ।

राष्ट्र निर्माण पार्टी के अध्यक्ष डॉ. आनन्द कुमार पूर्व आई.पी.एस. ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी वेदनिष्ठ थे। वे उद्‌भट्ट विद्वान् थे। उन्होंने बताया कि मैं उनका सहपाठी रहा, यह मेरा सौभाग्य है। आचार्य जी दूसरों का साहस बढ़ाते थे और आचार–विचार से सम्पन्न थे। वे विद्या और विचार से परिपूर्ण थे। उनका असमय निधन निःसंदेह आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति है।

शांति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा के कार्यक्रम में दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड तथा आस–पास के क्षेत्रों से सैकड़ों आर्यजनों ने पहुंचकर अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की तथा आर्य समाज के अनेक संस्थाओं के पदाधिकारियों ने अपनी ओर से लिखित में शोक संदेश भिजवाये। सार्वदेशिक आर्य पुरोहित सभा के प्रधान श्री प्रेमपाल शास्त्री ने अपने शोक संदेश में आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय को श्रद्धांजलि देते हुए लिखा कि वे विद्वत् शिरोमणि और महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त थे। अपने विचारों को एक योद्धा के रूप में प्रस्तुत करने की उनकी विशेष शैली थी। आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री तथा पं. विशुद्धानन्द शास्त्री सरीखे विद्वानों के चरणों में बैठकर श्रोत्रिय जी ने तार्किक शैली एवं वैदिक सिद्धान्तों के गूढ़ अर्थों को सीखा और अपनी प्रखर वाणी से प्रचारित एवं प्रसारित किया। मेरे वे बचपन के सखा थे, किन्तु हम उन्हें समस्त विद्वत् समाज में शिरोमणि स्थान पर प्रतिष्ठित रखते थे। ईश्वर ने उन्हें यह प्रतिभा एवं योग्यता प्रदान की हुई थी। उनके निधन से आर्य समाज की महान् क्षति हुई है जिसकी पूर्ति निकट भविष्य में सम्भव नहीं दिखती। प्रभु से प्रार्थना है दिवंगत आत्मा को अपने शरण में स्थान देकर सद्‌गति एवं शांति प्रदान करें। श्रद्धांजलि सभा के संयोजक आचार्य श्याम जी ने सभी शोक प्रस्ताव पढ़कर सुनाये। अन्त में परिवार की ओर से धन्यवाद ज्ञापित कर शांति पाठ के साथ सभा सम्पन्न हुई।

Swami Dayanand On Upbringing of children

— GBK Hooja

Blessed is the man who has three instructors - the mother, the father and the preceptor.

It is incumbent upon the parents that before, during and after conception, they should avoid the use of intoxicants, foul smelling and other substances that are injurious to mental development and should only take things that contribtute to calmness, health, strength, wisdom and energy such as clarified butter, milk, sweets, etc., so that the generative fluids of the mother and the father be virile and free from disease.

When the baby is born, it should be bathed with pure and scented water and its natal chord cut. Then the Homa (fumigation ceremony) should be preformed with clarified butter and scents. The mother should be provided with proper victuals and bathed so that the baby and the mother both gradually gather health and strength. The husband and wife who observe these injuctions are sure to be blessed with excellent progeny, long life, and prowess and all their children also shall possess these things.

The mother should give sound instructions to the children, so that they may have refined manners and may not misuse/abuse part of their body. The parents should inculcate in their children the habit of self restraint, a love of learning and desire for good company. Pernicious games, uncalled for crying and laughing, indulging in quarrels, pleasures, moroseness, undue attachment to an object, envy, ill-will, should be shunned. When the daughter and the son attain the age of five they should be taught the Devanagri script, and foreign scripts too. Thereafter, they should be encouraged to commit to memory (with meanings) the mantras (Vedic Verses), shlokas, (couplets) sutras (aphorisms), prose and poetry bearing upon virtue, God, mother, father, preceptor, learned men, guests, king, subjects, family, kinsmen, sister, servants so that they are not misled by any miscreant. If the people are deprived of the benefits of studying the sciences of Physiology and Physics, they attribute to ghosts and evil spirits, physical and mental diseases such as delirium, fever and insanity. Instead of taking appropriate medicines adn proper care, they repose their faith in knaves, hypocrites, selfish, mean persons and fall a prey to their tricks and machinations, thus wasting money and adding to their misery. Children should be taught in their infancy the real significarnce of such fraudulent practices so that they may not fall into the clutches of such charlatans and suffer. They should also be told that their well-being lies in preserving their semen and their misery in wasting it. Children should be taught to devote exclusive attention to healthy thoughts and acquisition of learning.

At the beginning of the 9th year they should receive the upanayan (Sacred thread) and be sent to the preceptor's family.

Children grow to be learned, mannerly and well-educated if the parents are not over-indulgent and duly chastise them when necessary. They should be taught to avoid theft, lewdness, sloth, vanity, intoxicating liquors, lying, violence, cruelty, malice, ill-will and infatuation. They should speak the truth and be true to their word. Ingratitude means the negation of the appreciation of the good done by other. One should speak neither more nor less than what is necessary. One should show due respect to one's elders. The parents and the preceptor should always impart good advice to the children and pupils and should tell them that they should follow only those actions of their elders which are righteous and avoid what ever they find vicious in them. Those parents who do not educate their children properly are their enemies. Such children are disgraced in the company of the learned, just as a crow is disgraced amidst a flight of swans.

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- **www.facebook.com/SwamiAryavesh** व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com

दूरभाष : 011-23274771, 42415359

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

दयानन्द मठ चम्बा के संस्थापक एवं आर्य समाज के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी सुमेधानन्द जी के 87वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में आयोजित त्रिदिवसीय समारोह उत्साहपूर्ण वातावरण में हुआ सम्पन्न

स्वामी आर्यवेश जी एवं आचार्य महावीर जी रहे मुख्य वक्ता

दयानन्द मठ चम्बा के संस्थापक, वैदिक विरक्त मण्डल के अध्यक्ष एवं आर्य समाज के प्रसिद्ध वीतराग संन्यासी स्वामी सुमेधानन्द जी के 87वें जन्मदिवस के अवसर पर 3 से 5 मई, 2024 को भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में आर्य जगत के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त स्वामी वेद प्रकाश सरस्वती, स्वामी देवानन्द सरस्वती, आचार्य अंशुदेव प्रधान छत्तीसगढ़ आर्य प्रतिनिधि सभा, स्वामी सोम्यानन्द, स्वामी निर्भयानन्द, स्वामी महानन्द, स्वामी आत्मानन्द, स्वामी सुमित्रानन्द, स्वामी व्रतानन्द, स्वामी सत्यानन्द, स्वामी शांतानन्द आदि संन्यासी सम्मिलित हुए। इस त्रिदिवसीय समारोह में यज्ञ के ब्रह्मा पद को सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने सुशोभित किया, मुख्य यजमान आचार्य महावीर जी एवं श्रीमती सरस्वती आर्या जी रहीं और यज्ञ एवं सम्पूर्ण कार्यक्रम का संयोजन श्री ऋषिराज आर्य ने किया तथा आचार्य अंशुदेव एवं उनके सहयोगियों ने वेद पाठ का दायित्व संभाला। प्रातः 7 से 9 बजे तक यज्ञ तथा 9 से 11 बजे तक प्रवचन एवं व्याख्यानों का कार्यक्रम चलता रहा। इसी प्रकार सायं 4 से 6 बजे तक यज्ञ तथा 6 से 8 बजे तक प्रवचन एवं भजनों का कार्यक्रम चला। इस पूरे समारोह की व्यवस्था में दयानन्द आदर्श उच्च विद्यालय की अध्यापिकाओं एवं कार्यकर्ताओं ने अथक परिश्रम किया।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी के ओजस्वी प्रवचन निरन्तर चलते रहे। उनके अतिरिक्त मठ के अध्यक्ष आचार्य महावीर जी के भी प्रभावशाली व्याख्यान हुए।

स्वामी आर्यवेश जी ने यज्ञ के वैज्ञानिक महत्त्व पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए बताया कि यज्ञ हमारे जीवन का आधार है। यज्ञ से पर्यावरण शुद्ध होता है और पर्यावरण से जल, जमीन तथा जंगल की सुरक्षा होती है। मनुष्य को प्रतिदिन नित्य कर्म से निवृत्त होने के बाद यज्ञ अवश्य करना चाहिए। जिनके घरों में प्रतिदिन यज्ञ होता है, वे लोग खुशहाल रहते हैं और उनका जीवन परोपकारी होता है। स्वामी जी ने कहा कि पूज्य स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी का जीवन यज्ञमय था। उन्होंने अपने जीवन में यज्ञ को सबसे अधिक महत्त्व दिया। स्वामी सुमेधानन्द जी के तप, त्याग और समर्पण के बलबूते पर ही आज इस मठ को आचार्य महावीर जी बड़ी कुशलता के साथ चला पाने में सक्षम हो पा रहे हैं। आचार्य महावीर जी स्वामी सुमेधानन्द जी द्वारा दिखाये रास्ते पर चलते हुए उनके सपनों को साकार करने में दिन–रात अथक परिश्रम करते रहते हैं और उनके इस कार्य में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सरस्वती आर्या जी कंधे से कंधा मिलाकर समर्पण भाव से सहयोग करती हैं। मैं आचार्य महावीर जी को साधुवाद देते हुए उनकी मुक्त कंठ से प्रशंसा करता हूँ और आशीर्वाद प्रदान करता हूँ कि वे इसी तरह से महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सिद्धान्तों को निरन्तर आगे बढ़ाने में अपनी अहम भूमिका निभाते रहें। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी आर्य जगत के वीतराग संन्यासी थे, सार्वदेशिक सभा संचालन समिति के अध्यक्ष भी रहे तथा वैदिक विरक्त मण्डल के संस्थापक अध्यक्ष भी रहे। स्वामी सुमेधानन्द जी बड़े ही सहृदय व्यक्तित्व के धनी थे।

उत्सव में भजनों का कार्यक्रम भी अत्यन्त प्रभावशाली रहा और मुख्यरूप से ओजस्वी गायक श्री ऋषिराज आर्य एवं उनकी पूरी मंडली कार्यक्रम में छाई रही। उनके अतिरिक्त श्री मधुरम आर्य अमृतसर, श्री भूपेन्द्र आर्य मुजफ्फरनगर, श्री सुनील कुमार शास्त्री, श्री मनोज कुमार शास्त्री, श्री संजय शास्त्री, श्रीमती नीतू आर्या, स्वामी संगीतानन्द एवं बहन सरस्वती आर्या के भजनों की भी विशेष प्रस्तुति रही।

इस त्रिदिवसीय जन्मोत्सव में स्वामी सुमेधानन्द शिष्ट मण्डल के अध्यक्ष श्री चतर सिंह सूर्यवंशी, श्री अमर सिंह आर्य, श्री रमेशचन्द्र शास्त्री आदि के अतिरिक्त श्री विक्रम महाजन, श्री सुनील कुमार, श्री सुरेश कुमार, कुमारी चेतना आर्या आदि का विशेष योगदान रहा। यज्ञ में श्रीमती गायत्री आर्या रायपुर, श्री धमेन्द्र आर्य छपरौली, आर्य समाज मानसा पंजाब के सदस्य एवं जालन्धर से भी श्रद्धालुजन उत्साह के साथ सम्मिलित हुए। उत्सव बड़ी धूमधाम तथा भव्यता के साथ मनाया गया। तीनों दिन ऋषि लंगर की समुचित व्यवस्था की गई थी। मठ की ओर से आचार्य महावीर जी ने सभी संन्यासियों, विद्वानों एवं उपदेशकों को दक्षिणा आदि से सम्मानित कर विदा किया। दयानन्द मठ चम्बा पूरे हिमाचल प्रदेश में एक मात्र केन्द्र है जहां संस्कृत महाविद्यालय, आयुर्वेद रसायनशाला, दयानन्द आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय एवं समाजसेवा की विभिन्न गतिविधियाँ संचालित होती हैं।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771, 42415359)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।